

जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥6 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये चतुरिन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन इन्द्रिया जीव जहाँ के, पर्याप्ती पाते हैं पाँच।
वह पर्याप्त जीव कहलाते, कथन प्रभु का है यह साँच ॥
जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥7 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये त्रीन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पर्याप्ती जो पूर्ण करें ना, तीन इन्द्रियाँ पाते हैं।
अपर्याप्त वह विकल जीव हैं, भव के दुःख उठाते हैं ॥
जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥8 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये त्रीन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच प्राप्त करते पर्याप्ती, स्पर्शन रसना धारी।
वह पर्याप्त जीव कहलाते, विकल जीव हैं दुखकारी ॥
जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥9 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये द्व-इन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दो इन्द्रिय पर्याप्ती अपनी, पूर्ण नहीं कर पाते हैं।
ऐसे विकल जीव इस जग में, अपर्याप्त कहलाते हैं ॥
जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥10 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये द्वीन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बादर एकेन्द्रिय जीवों के, पाँच भेद बतलाए हैं।
पर्याप्ती पूरी करते जो, वह पर्याप्त कहाए हैं ॥
जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥11 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये बादरैकेन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बादर एकेन्द्रिय प्राणी जो, पंच भेद युत गाये हैं।
पर्याप्ती ना पूर्ण करें वह, अपर्याप्त कहलाए हैं ॥
जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥12 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये बादरैकेन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूक्ष्म जीव एकेन्द्रिय के जिन, पंच भेद बतलाए हैं।
पर्याप्ती पूरी करते जो, वह पर्याप्त कहाए हैं ॥
जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥13 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये सूक्ष्मैकेन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नहीं रोकने रुकने वाले, सूक्ष्म जीव बतलाए हैं।
पर्याप्ती ना पूर्ण करे जो, अपर्याप्त कहलाए हैं ॥
जीवों पर करुणा करके जो, रक्षा करने वाले हैं।
परम अहिंसा व्रत के धारी, जग में संत निराले हैं ॥14 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये सूक्ष्मैकेन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- करे अहिंसा व्रत महा, जीवों का उपकार।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने बारम्बार ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत्य महाव्रत के 8 मंत्र

(चाल छन्द)

जो भय निमित्त से प्राणी, त्यागें असत्य मुनि ज्ञानी ।
वे सत्य महाव्रत धारी, होते हैं मंगलकारी ॥15 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये भयनिमित्त-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ईर्ष्या निमित्त जो भाई, त्यागें असत्य दुखदायी ।
वे सत्य महाव्रत धारी, होते हैं मंगलकारी ॥16 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये ईर्ष्यानिमित्त-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वपक्ष पुष्टि भी त्यागें, न कभी असत्य में लागे ।
वे सत्य महाव्रत धारी, होते हैं मंगलकारी ॥17 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये स्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पैशून्य असत्य के त्यागी, मुनि होते हैं बड़भागी ।
वे सत्य महाव्रत धारी, होते हैं मंगलकारी ॥18 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पैशून्य-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनि क्रोध निमित्त भी भाई, ना कहें असत्य दुखदायी ।
वे सत्य महाव्रत धारी, होते हैं मंगलकारी ॥19 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये क्रोधनिमित्त-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनि लोभ निमित्त मिलाए, न झूठ कभी कह पाए ।
वे सत्य महाव्रत धारी, होते हैं मंगलकारी ॥20 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये लोभनिमित्त-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नहिं आत्म प्रशंसाकारी, बोलें असत्य अनगारी ।
वे सत्य महाव्रत धारी, होते हैं मंगलकारी ॥21 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये आत्मप्रशंसा-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पर निन्दा हेतु निराले, ना झूठ बोलने वाले ।
वे सत्य महाव्रत धारी, होते हैं मंगलकारी ॥22 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये परनिन्दा-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- सत्य महाव्रत के धारी मुनि, जग में होते अपरम्पार ।
अर्घ्य चढ़ाते उनके पद में, वन्दन करके बारम्बार ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अचौर्य महाव्रत के 8 मंत्र

(चौबोला छन्द)

ग्रामादत्त ग्रहण व्रतधारी, नव कोटी से रहे विशुद्ध ।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, चारित पालन करते शुद्ध ॥23 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये ग्रामादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-चौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अरण्यादत्त ग्रहण के त्यागी, ज्ञानी होते श्रेष्ठ प्रबुद्ध ।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, चारित पालन करते शुद्ध ॥24 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अरण्यादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-चौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

खलादत्त के भाव रहित हैं, मुनिवर अनगारी जिन बुद्ध ।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, चारित पालन करते शुद्ध ॥25 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये खलादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-चौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

एकान्तादत्त ग्रहण न करते, कोई मार्ग करे अवरुद्ध ।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, चारित पालन करते शुद्ध ॥26 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये एकान्तादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-चौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्यत्रादत्त ग्रहण के त्यागी, मुनिवर होते मंगलकार ।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, चारित पालें अपरम्पार ॥27 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अन्यत्रादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-चौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उपधि ग्रहण करते अदत्त ना, व्रत धारी होते अविकार ।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, चारित पालें अपरम्पार ॥28 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये उपधि-अदत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-चौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आहारपान आदिक अदत्त का, त्याग करें जो विस्मयकार ।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, चारित पालें अपरम्पार ॥29 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये आहारपानादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-चौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पृष्ठ ग्रहण अदत्त विरती मुनि, करते हैं जग का उपकार ।
व्रत अचौर्य के धारी मुनिवर, चारित पालें अपरम्पार ॥30 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पृष्ठग्रहणादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-चौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- व्रत अचौर्य जग में रहा, मंगलमयी महान ।
पालन करते जीव जो, पाते पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचौर्यव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ब्रह्मचर्य महाव्रत के 20 मंत्र (शम्भू छन्द)

स्पर्शन इन्द्रिय विषयव्रती, मानुष स्त्री का त्याग करें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, न विषयों से अनुराग करें ॥31 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मानुषीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रसना इन्द्रिय के विषय व्रती, मानुष स्त्री परित्याग करें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, न विषयों से अनुराग करें ॥32 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मानुषीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घ्राणेन्द्रिय विषय व्रती मुनिवर, मानुष स्त्री परिहार करें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, न विषयों का व्यापार करें ॥33 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मानुषीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चक्षु इन्द्रिय के विषय व्रती, मानुष स्त्री से दूर रहें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, उपसर्ग परिषह स्वयं सहें ॥34 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मानुषीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्णेन्द्रिय विषयव्रती मुनिवर, मानुष स्त्री की चाह तर्जें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, निज परम ब्रह्म से स्वयं सजें ॥35 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मानुषीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्पर्शन इन्द्रिय विषयव्रती, सुर वनिता का परिहार करें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, ना विषयों का व्यापार करें ॥36 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रसनेन्द्रिय व्रत के धारी मुनि, सुर वनिता का परित्याग करें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, ना विषयों में अनुराग करें ॥37 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घ्राणेन्द्रिय विषय विहीन यती, सुर वनिताओं से दूर रहें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, उपसर्ग परीषह आप सहें ॥38 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चक्षु इन्द्रिय विषय त्यागी, सुर वनिता से ना नेह करें ।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, न विषयों से स्नेह धरें ॥39 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कर्णेन्द्रिय विषय व्रती मुनिवर, सुर वनिताओं की चाह तर्जें।
नव कोटि शुद्ध हो ब्रह्मव्रती, निज आत्म ब्रह्म से स्वयं सर्जें ॥40 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चाल छंद)

**स्पर्शनेन्द्रिय व्रत धारी, तजते तिर्यच की नारी।
जो ब्रह्मचर्य व्रत धारें, वह विषयों को परिहारें ॥41 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिर्यकस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रसना इन्द्रिय व्रत धारी, तजते तिर्यच की नारी।
जो ब्रह्मचर्य व्रत धारें, वह विषयों को परिहारें ॥42 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिर्यकरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**घ्राणेन्द्रिय विषय त्यागी, त्रियश्ची से रहें विरागी।
जो ब्रह्मचर्य व्रत धारें, वह विषयों को परिहारें ॥43 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**चक्षु इन्द्रिय व्रत धारें, वह त्रियश्ची को परिहारें।
जो ब्रह्मचर्य व्रत धारें, वह विषयों को परिहारें ॥44 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कर्णेन्द्रिय विषय विरागी, रहते तिर्यञ्चनी त्यागी।
जो ब्रह्मचर्य व्रत धारें, वह विषयों को परिहारें ॥45 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई)

**स्पर्शन इन्द्रिय व्रत धारी, अचित्त स्त्री के परिहारी।
ब्रह्म व्रती मुनिवर कहलाते, सारे जग से पूजे जाते ॥46 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रसना इन्द्रिय विषय त्यागी, स्त्री चित्र के ना अनुरागी।
ब्रह्म व्रती मुनिवर कहलाते, सारे जग से पूजे जाते ॥47 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**विषय घ्राण इन्द्रिय के त्यागों, चित्राम स्त्री ना अनुरागों।
ब्रह्म व्रती मुनिवर कहलाते, सारे जग से पूजे जाते ॥48 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**चक्षु इन्द्रिय विषय विरागी, चित्र स्त्री में होंय ना रागी।
ब्रह्म व्रती मुनिवर कहलाते, सारे जग से पूजे जाते ॥49 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**विषय कर्णेन्द्रिय के परिहारी, चित्र स्त्री के हों अविकारी।
ब्रह्म व्रती मुनिवर कहलाते, सारे जग से पूजे जाते ॥50 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**दोहा- ब्रह्मचर्य व्रत के धारी मुनि, स्त्री का करते परित्याग।
विषयों के त्यागी होकर के, आत्म से करते अनुराग ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परिग्रह त्याग के 24 मंत्र

**क्रोध कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं।
कर्मोदय से दुर्गति पाकर, वे नरकों में जाते हैं ॥
कर्म नाशकर यह तीर्थकर, शिव पदवी को पाते हैं।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं ॥51 ॥**

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये क्रोधकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**करके मान कषाय जगत में, शांती मन की खोते हैं।
दुर्गति के भागी बनते हैं, बीज कर्म के बोते हैं ॥**

कर्म नाशकर यह तीर्थकर, शिव पदवी को पाते हैं ।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं ॥52 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मानकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मायाचारी करने वाले, इस जग में भटकाते हैं ।
खोते हैं विश्वास पूर्णतः, पशुगति में वह जाते हैं ॥
कर्म नाशकर यह तीर्थकर, शिव पदवी को पाते हैं ।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं ॥53 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मायाकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोभ कषाय से लोभी प्राणी, जोड़-जोड़ मर जाते हैं ।
खाते-पीते और कोई फल, कर्मों का वह पाते हैं ॥
कर्म नाशकर यह तीर्थकर, शिव पदवी को पाते हैं ।
यह संसार वास को तजकर, शिवपुर धाम बनाते हैं ॥54 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये लोभकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई)

हास्य कषाय उदय में आवे, प्राणी हँस-हँस के खिल जावे ।
जिनवर हास्य कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥55 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये हास्यनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रती उदय में जिसके आवे, वह औरों से प्रीति जगावे ।
जिनवर मान कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥56 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये रतिनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अरति भाव मन में आ जावे, अप्रीति का वह भाव जगावे ।
जिनवर माया के हैं नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥57 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अरतिनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुछ भी इष्टानिष्ट दिखावे, मन में प्राणी शोक मनावे ।
जिनवर लोभ कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥58 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये शोकनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चीज दिखे कोई भयकारी, मन में व्याकुल होवे भारी ।
जिनवर भय कषाय के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥59 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये भयनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्व-पर के गुण दोष दिखावे, मन में ग्लानी को उपजावे ।
जिनवर कहे जुगुप्सा नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥60 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये जुगुप्सानोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन में व्याकुल होके भारी, रमने को खोजे वह नारी ।
जिनवर पुरुषवेद के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥61 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पुंवेदनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रमण करे पुरुषों में भारी, उसके वेदोदय हो नारी ।
जिनवर स्त्रीवेद के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥62 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये स्त्रीवेदनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन में नर नारी की आशा, रमने की करते अभिलाषा ।
जिनवर वेद नपुंसक नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥63 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नपुंसकवेदनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिथ्याभाव उदय में आवे, सम्यक् श्रद्धा न हो पावे ।
जिन होते मिथ्या के नाशी, पद पाते अनुपम अविनाशी ॥64 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मिथ्यात्वाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-
परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौबोला छन्द)

द्विपद परिग्रह पाने वाले, कर्मों का करते हैं बन्ध ।
स्वजन और परिजन से अपना, बढ़ा रहे प्राणी सम्बन्ध ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं ।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥65 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये द्विपदबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संग चतुष्पद पाने वाले, अतिशय मोह बढ़ाते हैं ।
कर्म बन्ध करते हैं भारी, दुर्गति पंथ सजाते हैं ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं ।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥66 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये चतुष्पदबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षेत्र परिग्रह पाने वाले, जर्मींदार कहलाते हैं ।
अहंकार की कार के ऊपर, जो सवार हो जाते हैं ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं ।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥67 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये क्षेत्रबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धान्य परिग्रह रखने वाले, फूले नहीं समाते हैं ।
चारित मोह कर्म के कारण, कर्म बन्ध ही पाते हैं ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं ।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥68 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये धान्यबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुप्य परिग्रह पाकर प्राणी, राग-द्वेष भरपूर करें ।
क्लेश बढ़ाते हैं औरों के, मन का जो सुख चैन हरे ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं ।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥69 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये कुप्यबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भाण्ड परिग्रह रखने वाले, सन्तुष्टी ना पाते हैं ।
कितने भी बर्तन पा जाएँ, नित प्रति राग बढ़ाते हैं ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं ।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥70 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये भांडबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धन परिग्रह जो रखने वाले, वह दुख भारी पाते हैं ।
सेवा टहल चाकरी करके, भारी दुःख उठाते हैं ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं ।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥71 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये धनबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वाहन यान परिग्रह धारी, पाकर जग में भ्रमण करें ।
दिन होवे या रात निरन्तर, चतुर्दिशा में गमन करें ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं ।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥72 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये यानबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शयन हेतु शैय्या पाटा का, मन में राग बढ़ाते हैं ।
शयन परिग्रह के धारी वह, कर्म बन्ध ही पाते हैं ॥

बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥73 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये शयनबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आसन परिग्रह के लालच में, जो भी प्राणी रहते हैं।
उसकी चाहत करने वाले, कष्ट अनेकों सहते हैं ॥
बाह्य परिग्रह त्यागी मुनिवर, मोक्ष महापद पाते हैं।
उनके चरणों विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं ॥74 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये आसनबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-परिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- परिग्रह बतलाए प्रभु, यह चौबीस प्रकार।
त्याग करें मुनिराज जी, पाने भवदधि पार ॥
सुव्रत अपरिग्रह धारते, जो ज्ञानी गुणवान।
उन जीवों का शीघ्र ही, हो जाता कल्याण ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अपरिग्रहव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत का 1 मंत्र
(चौबोला छन्द)

सम्यक् चारित्र पाने वाले, रात्रि भोजन का परित्याग।
नव कोटि से हो विशुद्ध वह, कभी नहीं करते हैं राग ॥
यह अणुव्रत पालन करते हैं, शिवपथ के राही अनगार।
उनके चरणों वन्दन मेरा, 'विशद' भाव से बारम्बार ॥75 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये रात्रिभोजनत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाणुव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- रात्रि भुक्ती त्यागते, सम्यक् चारित्रवान।
रहते निज में लीन जो, जग में रहे महान ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये रात्रिभुक्ति अणुव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ईर्यासमिति का 1 मंत्र

(चौबोला छन्द)

चार हाथ भूमि को लखकर, ईर्यापथ से चलें मुनीश।
नव कोटि से चारित्र पाले, उनके चरण झुकाते शीश ॥
ईर्या समिति का पालन करते, शिवपथ के राही अनगार।
उनके चरणों विशद भाव से, वन्दन मेरा बारम्बार ॥76 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-ईर्यासमितिये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- पञ्च समिति धारते, चारित्र लब्धीवान।
शिव पद के राही 'विशद', करते जगकल्याण ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये ईर्यासमितिये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भाषासमिति के 10 मंत्र

जो वस्तू जिस देश में जाने भाई रे, सत्य वचन हो उसको माने भाई रे।
जनपद सत्य कहावे वह सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥77 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये जनपदसत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रौद्रिक जाको नाम सकल जन गाई रे, जो संवृत्ती सत्य मानते भाई रे।
यह संवृत्ती सत्य कहा सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥78 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये संवृत्तिसत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चित्र मनुज ह्यगय वृष के शुभ भाई रे, उनको मनुज पशु ही बोलें भाई रे।
यह स्थापना सत्य कहा सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥79 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये स्थापनसत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है प्रसिद्ध शुभ नाम जहाँ में भाई रे, उसको वह ही कहना जग में भाई रे।
नाम सत्य कहलाया यह सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥80 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नामसत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

काला पीला रंग कहा जो भाई रे, उसको वैसा ही कह देना भाई रे।
रूप सत्य कहलाया यह सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥81 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये रूपसत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

छोटा बड़ा कहे वस्तु को भाई रे, यह सापेक्ष कथन है अनुपम भाई रे।
 यह प्रतीत्य शुभ सत्य कहा सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥82॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये प्रतीत्यसत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 नैगम नय से वचन कहे जो भाई रे, उन वचनों को वैसा माने भाई रे।
 यह व्यवहार सत्य जानो शुभ भाई रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥83॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये व्यवहारसत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 शक्र भूमि को उल्टा कर दे भाई रे, ऐसी शक्ती पाने वाले भाई रे।
 यह संभावना सत्य कहा सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥84॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये संभावनासत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 स्वर्ग नर्क कई द्वीप बताए भाई रे, कंदमूल में जीव अनंत बताई रे।
 भावसत्य यह कहा श्रेष्ठ सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥85॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये भावसत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 मानव कई उपमाएँ देवे भाई रे, उसको वैसा ही माने नर भाई रे।
 उपमा सत्य कहा यह जग सुखदायी रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥86॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये उपमासत्यस्वरूप भाषासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 तजदे प्राण असत् न बोलें भाई रे, सत्य वचन उर धारण करते भाई रे।
 भाषा समिति कही आगम में भाई रे, जैनागम की जानो ये प्रभुताई रे ॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये भाषासमीतिये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एषणा समिति 46 मंत्र

16 उद्गम दोषरहित (दोहा)

जो निमित्त से पात्र के, भोजन करें तैय्यार।
 औद्देशिक वह दोष का, दाता भागीदार ॥
 मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार।
 सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥87॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये औद्देशिकदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 जो पात्रों को देखकर, भोजन करें तैय्यार।
 होता अध्यदि दोष का, दाता भागीदार ॥

मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार।
 सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥88॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अध्यदिदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 अचित मिलाकर जो कभी, देता है आहार।
 पूतिकर्म के दोष का, दाता भागीदार ॥
 मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार।
 सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥89॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये पूतिकर्मदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 देय असंयम से सहित, दाता जो आहार।
 मिश्र दोष का वह विशद, होता भागीदार ॥
 मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार।
 सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥90॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये मिश्रदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 भोजन के स्थान से, रखे अन्य स्थान।
 है स्थापित दोष यह, उद्गम दोष महान् ॥
 मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार।
 सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥91॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये स्थापितदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 देव पितर के लक्ष्य से, भोजन हो तैय्यार।
 बली दोष से युक्त वह, दाता का आहार ॥
 मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार।
 सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥92॥
 ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये बलिदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 धीरे-धीरे या कभी, शीघ्र देय आहार।
 वह प्रावर्तित दोष का, दाता भागीदार ॥
 मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार।
 सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥93॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भोजन के स्थान पर, दाता करे प्रकाश ।
प्राविष्करण के दोष का, है वह भागीदार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥94 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये प्राविष्करणदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता विद्या क्रीत जो, मुनि को दे आहार ।
क्रीत दोष का वह विशद, बनता भागीदार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥95 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये क्रीतदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता ऋण लेकर यदि, मुनि को दे आहार ।
वह दाता ऋण दोष का, बनता भागीदार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥96 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये प्रामृष्यदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परिवर्तन कर वस्तु का, दाता दे आहार ।
वह परिवर्तन दोष का, होता भागीदार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥97 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये परिवर्तनदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्य ग्राम से लायकर, दे मुनि को आहार ।
दाता अभिघट दोष का, बनता भागीदार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥98 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अभिघटदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बंद वस्तु को खोलकर, दे मुनि को आहार ।
करे दोष उद्भिन्न वह, दाता अंगीकार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥99 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये उद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चढ़कर सीढ़ी से कोई, लाए कुछ आहार ।
मालारोहण दोष का, दाता भागीदार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥100 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये मालारोहणदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता मुनिवर को करें, त्रास और भयकार ।
दोषी वह अच्छेद्य का, दाता का आहार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥101 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता कोई और का, देते जो आहार ।
अनीशार्थ वह दोष का, दाता भागीदार ॥
मुनी ऐषणा दोष का, करते हैं परिहार ।
सम्यक् चारित के धनी, जग में मंगलकार ॥102 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये अनीशार्थदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- सोलह उद्गम दोष यह, दाता के आधीन ।
मुनिवर टालें भाव से, ज्ञानी दोष विहीन ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये षोडशोद्गमदोषरहितैषणासमितिसहित पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

16 उत्पादन दोषरहित (विष्णुपद छन्द)
धाय समान यती दाता का, बालक नहलावे ।
कर शृंगार खिलाने वाला, दोषी कहलावे ॥

धात्री दोष रहित मुनिवर की, महिमा है न्यारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥103 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये धातृदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता के गृह जाय यतीश्वर, इत उत बतरावें ।

देशान्तर की कहें वार्ता, दोषी कहलावें ॥

दूत दोष से रहित मुनिश्वर, की महिमा है न्यारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥104 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये दूतदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निमित्त ज्ञान की बात कहें शुभ, मुनिवर सुखदायी ।

उसके गृह आहार करें फिर, दोषी वह भाई ॥

दोष निमित्त से रहित मुनीश्वर, की महिमा न्यारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥105 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये निमित्तदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता से प्रभुता की अर्चा, करते सुखदायी ।

सुन्दर भोजन अतः कराए, दोषी मुनि भाई ॥

दोष रहित आजीवक मुनिवर, की महिमा न्यारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥106 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये आजीवकदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता के गृह कहे सुहावन, चर्या सुखदायी ।

दोषी करे चाह भोजन की, जो करते भाई ॥

दोष वनीपक रहित मुनीश्वर, की महिमा न्यारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥107 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये वनीपकदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता को औषधि देकर के, भोजन जो पावें ।

दोष चिकित्सा के धारी वह, साधू कहलावें ॥

रहित चिकित्सा दोष मुनीश्वर, की महिमा न्यारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥108 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये चिकित्सादोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्रोध युक्त हो गृह दाता के, भोजन को जावें ।

समिति एषणा के वह मुनिवर, दोषी कहलावें ॥

क्रोध दोष से रहित मुनीश्वर, होते अविकारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥109 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये क्रोधदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानी दीर्घ तपस्वी हैं हम, ऐसा मद पावें ।

समिति ऐषणा के दोषी वह, मुनिवर कहलावें ॥

मान दोष से रहित मुनीश्वर, होते अविकारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥110 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये मानदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता के गृह कपट भाव से, मुनिवर सुखदायी ।

समिति ऐषणा के दोषी वह, कहे गये भाई ॥

माया दोष से रहित मुनीश्वर, होते अविकारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥111 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये मायादोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रसना इन्द्री के लोभी हो, भोजन जो पावें ।

समिति ऐषणा के दोषी वह, मुनीवर कहलावें ॥

लोभ दोष से रहित मुनीश्वर, होते अविकारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥112 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये लोभदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दाता के गृह जाकर मुनिवर, जो गुणगान करें ।

भोजन करें बाद में उस गृह, स्तुति दोष वरें ॥

पूर्व स्तुति रहित मुनीश्वर, होते अविकारी ।

सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥113 ॥

ॐ हीं सम्यक्चारित्रलब्धये पूर्वप्रस्तुतिदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भोजन करके जो दाता का, शुभ गुणगान करें।
वह मुनिवर पश्चात् स्तुति, का भी दोष वरें॥
दोष रहित पश्चात् स्तुति, होते अविकारी।
सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥1114 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाता को खुश करने हेतू, विद्या दिखलावें।
विद्या दोष युक्त वे मुनिवर, दोषी कहलावें॥
विद्या दोष रहित मुनिवर की, महिमा है न्यारी।
सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥1115 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये विद्यादोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यंत्र मंत्र तंत्रादी अतिशय, मुनिवर दिखलावें।
दाता के गृह भोजन लें, फिर, दोषी कहलावें॥
मंत्रादिक सब दोष रहित मुनि, की महिमा न्यारी।
सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥1116 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मन्त्रदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाता को काजल चूर्णादिक, दे आहार करें।
चूर्ण दोष को वे मुनिवर जी, अपने शीश धरें॥
चूर्ण दोष से रहित मुनि की, महिमा है न्यारी।
सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥1117 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये चूर्णदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वशीकरण आदिक युक्ति जो, दाता को देवे।
उस गृह में आहार करें जो, दोष मुनी सेवें॥
मूल कर्म के दोष रहित मुनि, होते अविकारी।
सम्यक् चारित धारी मुनिवर, हैं मंगलकारी ॥1118 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मूलकर्मदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- षोडश दोष रहित उत्पादन, मुनिवर शुभकारी।
तीन लोक में पूज्य रहे हैं, अतिशय अविकारी॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये षोडशदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 ऐषणा समिति दोषरहित (विशद छन्द)

भोजन भक्ष्याभक्ष्य है कैसा, शंका करके खावें।
महाव्रतों में मुनिवर अपने, शंकित दोष उपावें।
भाई व्रत में दोष लगावें।

शंकित दोष रहित मुनिवर जी, मोक्ष महल को जावें ॥1119 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये शंकितदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिकने बर्तन चिकने कर से, मुनिवर भोजन पावें।
करते जो आहार मुनी वह, मृच्छित दोष उपावें॥
भाई व्रत में दोष लगावें।

मृच्छित दोष रहित मुनिवर जी, मोक्ष महल को जावें ॥1120 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये भ्रक्षितदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सचित्त वस्तु पर रक्खा भोजन, मुनिवर जी जो खावें।
वह निक्षिप्त दोष के भागी, मुनिवर आप कहावें॥
भाई व्रत में दोष लगावें।

निक्षिप्त दोष से रहित मुनीश्वर, मोक्ष महल को जावें ॥1121 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सचित्त पत्र आदिक वस्तु से, भोजन ढाका जावे।
ऐसे भोजन पिहित दोष युत, मुनि जानकर खावे॥
भाई व्रत में दोष लगावें।

पिहित दोष से रहित मुनीश्वर, शिव पदवी को पावें ॥1122 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पिहितदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोगी वृद्ध बाल सूतक गृह, अग्नि तुरत बुझावें।
गर्भवती नारी से भोजन, दायक दोष कहावे॥
भाई व्रत में दोष लगावें।

दोष रहित आहार मुनीश्वर, मोक्ष महल को जावें ॥1123 ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये आहारदोषरहितैषणासमितिसहित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।